|| श्री गणेशाय नमः ||

आरती संग्रह

(मराठी)

पं. विलास ठुसे
प्लेझंटन (यु.एस.ए.)

|| श्री गणपतीची आरती ||

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नाची | नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची |
सर्वांगी सुंदर उटि शेंदूराची | कंठी झळके माळ मुक्ता फळाची ||
जय देव जय देव जय मंगलमुर्ती | दर्शनमात्रे मन कामना पुरती || जय देव जय देव || धृ ||

रत्नखचित फरा तुज गौरी कुमरा | चंदनाची ऊटी कुंकुम केशरा |
हिरेजडीत मुगुट शोभतो बरा | रूणझुणती नूपुरे चरणी घागरीया || १ || जय देव जय देव

लंबोदर पितांबर फणिवर बंधना | सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना |
दास रामाचा वाट पाहे सदना | संकष्टी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवर वंदना || २ || जय देव जय देव

|| देवीची आरती ||

दुर्गे दुर्घट भारी तुजविण संसारी | अनाथ नाथे अंबे करूणा विस्तारी |
वारी वारी जन्म मरणांते वारी | हारी पडलो आता संकट नीवारी ||
जय देवी जय देवी जय महिषासुर मथिनी | सुरवर ईश्वरवरदे तारक संजीवनी | जय देवी जय देवी || धृ ||

त्रिभुवनी भुवनी पाहता तुज ऐसी नाही | चारी श्रमले परंतु न बोलवे कांही |
साही विवाद करिता पडीलो प्रवाही | ते तु भक्तांलागी पाविसी लवलाही || १ || जय देवी जय देवी

प्रसन्न वदने प्रसन्न होशी निजदासा | क्लेशांपासुनी सोडी तोडी भवपाशा
अंबे तुजवांचून कोण पुरविल आशा | नरहरी तल्लिन झाला पदपंकजलेशा || २ || जय देवी जय देवी

|| शंकराची आरती ||

लवथवती विक्राळा ब्रह्मांडी माळा | वीषे कंठ काळा त्रिनेत्री ज्वाळा |
लावण्य सुंदर मस्तकीबाळा | तेथुनिया जळ निर्मळ वाहे झुळझुळा |
जय देव जय देव जय श्रीशंकरा | आरती ओवाळू तुज कर्पुरगौरा | जय देव जय देव || धृ ||

कर्पुरगौरा भोळा नयनी विशाळा | अर्धांगी पार्वती सुमनांच्या माळा |
विभुतीचे उधळण शितकंठ नीळा | ऐसा शंकर शोभे उमा वेल्हाळा || १ || जय देव जय देव

देवी दैत्यी सागर मंथन पै केले | त्यामाजी अवचित हळहळ जे उठले |
ते त्वा आसुरपणे प्राशन केले | नीळकंठ नाम प्रसिद्ध झाले || २ || जय देव जय देव

व्याघ्रांबर फणिवरधर सुंदर मदनारी | पंचानन मनमोहन मुनिजन सुखकारी |
शतकोटीचे बीज वाचे उच्चारी | रघुकुलतिलक रामदासा अंतरी || ३ || जय देव जय देव

|| श्री दत्ताची आरती ||

त्रिगुणात्मक त्रयमूर्ति दत्त हा जाणा | त्रिगुणी अवतार त्रैलोक्य राणा |
नेती नेती शब्द न ये अनुमाना | सुरवर मुनीजन योगी समाधि न ये ध्याना ||
जय देव जय देव जय श्रीगुरुदत्ता | आरती ओवाळिता हरली भवचिंता | जय देव जय देव || धृ ||

सबाह्य अभ्यंतरी तू एक दत्त | अभाग्यासी कैंची कळेल ही मात |
पराहि परतली तेथे कैचा हेत | जन्म मरणाचाहि पुरलासे अन्त || १ || जय देव जय देव

दत्त येउनिया उभा ठाकला | सद्भावे साष्टांगे प्रणिपात केला |
प्रसन्न होउनि आशिर्वाद दिधला | जन्म मरणाचा फेरा चुकविला || २ || जय देव जय देव

दत्त दत्त ऐसे लागले ध्यान | हरपले मन झाले उन्मन |
मी तूं पणाची झाली बोळवण | एका जनार्दनी श्रीदत्त ध्यान || ३ || जय देव जय देव

|| विठ्ठलाची आरती ||

युगे अठ्ठाविस विटेवरी उभा | वामांगी रखुमाई दिसे भव्य शोभा
पुंडलिकाचे भेटी परब्रह्म आले गा | चरणी वाहे भीमा उद्धरी जगा ||
जय देव जय देव जय पांडुरंगा | रखुमाई वल्लभा राईच्या वल्लभा पावे जिवलगा | जय देव जय देव || धृ ||

तुळसीमाळा गळां कर ठेवुनि कटी | कांसे पीतांबर कस्तुरि लल्लाटि |
देव सुरवर नित्य येती भेटी | गरुड हनुमंत पुढे उभे राहती || १ || जय देव जय देव

धन्य वेणूनाद अणूक्षेत्रपाला | सुवर्णाची कमळे वनमाळा गळा |
राई रखुमाबाई राणीया सकळा | ओवाळीती राजा विठोबा सांवळा || २ || जय देव जय देव

ओवाळू आरत्या कुर्वंड्या येती | चंद्रभागेमध्ये सोडुनिया देती |
दिंडया पताका वैष्णव नाचती | पंढरीचा महिमा वर्णावा किती || ३ || जय देव जय देव

आषाढी कार्तिकी भक्तजन येती | चंद्रभागेमध्ये स्नान जे करिती |
दर्शनहेळामात्रे तयां होय मुक्ती | केशवासी नामदेव भावे ओवाळीती || ४ || जय देव जय देव

|| श्रीसत्यनारायणाची आरती ||

जय जय दीनदयाळा सत्यनारायण देवा | पंचारती ओवाळू श्रीपति तुज भक्तिभावा || जय जय दीनदयाळा || धृ ||

विधियुक्त पूजुनी करिती पुराण श्रवण | परिमळ द्रव्यासहित पुष्पमाळा अर्पून ||
धृतयुक्त शर्करामिश्रित गोधूमचूर्ण | प्रसाद भक्षण करिता प्रसन्न तू नारायणा || १ ||
जय जय दीनदयाळा

शतानंदविप्रे पूर्वी व्रत हे आचरिले | दरिद्र दवडूनी अंती त्याते मोक्षपदा नेले ||
त्यापासुनि हे व्रत कलियुगी सकळां श्रुत झाले | भावार्थे पूजितां सर्वां ईच्छित लाभले || २ ||
जय जय दीनदयाळा

साधु वैश्ये संततिसाठी तुजला प्रार्थीले | इच्छित पुरता मधांध होऊनि व्रत न आचरिले ||
त्या पापाने संकटी पडुनी दुःखहि भोगीले | स्मृति होऊनि आचरिता व्रत त्या तुवाचि उद्धरिले || ३ ||
जय जय दीनदयाळा

प्रसाद विसरूनी पतिभेटीला कलावती गेली | क्षोभ तुझा होताचि तयांचि नौका बुडाली ||
अंगध्वज राजासी यापरी दुःखस्थिती आली | मृतवार्ता शतपुत्रांची सत्वर कर्णी पसरली || ४ ||
जय जय दीनदयाळा

पुनरपि पूजनी प्रसाद ग्रहण करिता तत्क्षणी | पतिची नौका तरली देखे कलावती नयनी ||
अंगध्वज राजासी पुत्र भेटती येउनी | ऐसा भक्तां संकटि पावसि तू चक्रपाणी || ५ ||
जय जय दीनदयाळा

अनन्य भावे पूजुनि हे व्रत जे नर आचरती | इच्छित पुरविसी त्यांते देउनि संतति संपत्ती ||
संहरती भय दुरिते सर्वहि बंधने तुटती | राजा रंक समान मानुनि पावसी श्रीपती || ६ ||
जय जय दीनदयाळा

ऐसा तव व्रत अपार महिमा वर्णू मी कैसा | भक्तिपुरःसर आचरती त्यां पावसि जगदीशा |
भक्तांचा कनवाळू कल्पद्रुम तू सर्वेशा | मोरेश्वरसुत तुज विनवी भवनाशा || ७ ||

जय जय दीनदयाळा सत्यनारायण देवा | पंचारती ओवाळू श्रीपति तुज भक्तिभावा ||
जय जय दीनदयाळा...|| धृ ||

|| श्री लक्ष्मीची आरती ||

दितिजा दितिजे यज्ञे पयसागर मायिला | सिंधु प्रसवे तेरा रत्ने सहित्य तुला
त्यजुनि सुरासुर मानव ऋषिमंडल सकला | श्रीविष्णूच्या कंठी घालिसि तू माला ||
जय जय लक्ष्मी फल सुख फल तव भजनाते | पीडा निरसुनि रक्षण करि सर्वजनाते || धृ ||

तत्पदि पुंडरिकास्तव पंढरपुरी राहे | सत्सन्निध रक्षांगी वससी तू माये |
सन्मुख कान्होपात्र हेमाश्वत्थाहे | त्वत्पूजकाकडे कधि काळ न पाहे || १|| जय जय लक्ष्मी

द्यावे सर्व जनाला सौख्य जगन्माते | निर्दाळावे जननी सर्वारिष्टाने |
तू मातोश्री तुजविण प्रार्थू कवणाते | करूणा करिते श्रीहरि कान्ते सिंधुसुते || २ || जय जय लक्ष्मी

निज भक्ताला आयुष्य धेनु धन धान्य | स्त्री पुत्र पौत्र देऊनि करिसी जगमान्य |
सिबिका वरण हयरय देशिल सन्मान्य | दातृत्व तुझे तुज सम कोण असे अन्य || ३ || जय जय लक्ष्मी

सर्वहि दुःखे शक्ती शमती त्वन्नाभस्मरणे | यास्तव विधिरह सूरवर पूजिति सन्माने |
तुझिया मंडपि होति द्विज भोजन भजने | यशवन्तत्मज भावे त्वत्पदि करि नमने || ४ || जय जय लक्ष्मी...५

|| श्री लक्ष्मी स्तुति ||

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि | हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ||

|| महालक्ष्मीची आरती ||

जय देवी जय देवी जय श्री लक्ष्मी माते | प्रसन्न होउनि आता वर दे आम्हाते || जय देवी जय देवी || धृ ||

श्रीविष्णुकान्ते तव विश्वावरि सत्ता |
स्थिरचर दौलत देशी लक्ष्मी व्रत करिता || १ || जय देवी जय देवी

जननी तुज ऐसी या नाही त्रिभुवनी |
सुरवर वंदिती मस्तक ठेवुनि तव चरणी || २ || जय देवी जय देवी

कृपा प्रसादे तुझिया लाभे सुखशांती |
चिंता क्लेशहि जाती नुरते आपत्ती || ३ || जय देवी जय देवी

वैभव ऐश्वर्याचे आणि अपार द्रव्याचे |
देसी दान दयाळे सदैव सौख्याचे || ४ || जय देवी जय देवी

यास्तव मिलिंद माधव आरती ओवाळी |
प्रेमे भक्ति भावे लोटांगण घाली || ५ || जय देवी जय देवी

|| प्रार्थना ||

घालीन लोटांगण वंदीन चरण | डोळ्यानि पाहिन रूप तुझे हे |
प्रेमे आलिंगन आनंदे पूजिन | भावे ओवाळिन म्हणे नामा || १ ||

त्वमेव माता च पिता त्वमेव | त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव |
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव | त्वमेव सर्वं मम देव देव || २ ||

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा | बुद्ध्यात्मना वा प्रकृति स्वभावात् |
करोमि यद्यत सकलं परस्मै | नारायणायति समर्पयामि || ३ ||

अच्युतं केशवं राम नारायणं | कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिं |
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं | जानकी नायकं रामचंद्रं भजे || ४ ||

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे | हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे |
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे | हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ||

|| मंगलमूर्ती मोरया || गणपती बाप्पा मोरया || भगवान श्री सत्यनारायण महाराजकी जय ||

|| कर्पूरारती ||

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसार सारं भुजगेंद्रहारं | सदारहासी हृदयारवंदी भवंभवानी सह तुज वंदी ||

|| मंत्र पुष्पांजली ||

ॐ यज्ञेन यज्ञ मह्यंत देवाः स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् |
तेहनाकम् महिमानः सचंत यत्र पूर्वेः साध्याः संति देवाः |
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे |
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ||
कुबेराय वैश्रवणाय | महाराजाय नमः |
ॐ स्वस्ति ऽ साम्राज्यं ऽ भौज्यं ऽ स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं |
राज्यं ऽ महाराज्यमाधिपत्यमयं ऽ समंत पर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषांतादा परार्धात् |
पृथिव्यै समुद्र पर्यंतायाः | एकराळिति |
तदप्येष श्लोकोऽभिगितो मरूतः परिवेष्टारो मरूतस्या | वसन् गृहे |
आविक्षितस्य काम प्रे | विश्वेदेवाः | सभासद इति |

|| इति मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ||

卐 卐 卐 卐 卐 卐